विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

ई - पत्रिका (अंक-15) जनवरी -2022

ज्ञानोदय

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर सी -41, सेक्टर -12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका जनवरी- 2022

ज्ञानोदय अंक -15

संरक्षक

श्री वी.एल.मल्होत्रा

श्री प्रताप मेहता

श्री मधुसूदन दादू

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री बलवीर सिंह (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

सह-संपादक

श्री लेखराज सिंह, श्री दीपक कुमार

श्रीमती रेखा सिन्हा, श्रीमती हिमाद्री पुंढीर

क्रम-सूची

- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- शुभकामनाएँ
- संपादकीय
- नैपुण्य वर्ग
- जयंतियाँ
- आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)
- भैया /बहिनों के क्रियाकलाप
- अभिभावक अभिव्यक्तियाँ
- लोहड़ी, मकर संक्रांति व गणेश चतुर्थी कार्यक्रम
- गणतंत्र दिवस
- प्रतिभा खोज प्रतियोगिता
- सूर्य नमस्कार अभ्यास
- बच्चों का कोना
- सामान्य ज्ञान
- अमृतवाणी

प्रधानाचार्य जी की कलम से......

माता - पिता प्रथम शिक्षक

हमारे जीवन में माता-पिता के अनन्त उपकार होते हैं जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सदा हमारे साथ रहते हैं। हम कह सकते हैं कि माता-पिता की कृपा से ही हम अपने जीवन को खुशहाल राहों पर गतिमान रख सकते हैं। माता-पिता हमें जन्म देते हैं,सुरक्षित जीवन देते हैं और जीवन को आकर्षक बनाने हेतु अच्छे संस्कार देते हैं। माता-पिता के दिए हुए संस्कारों से ही हम जीवन जीने की कला सीख कर अपना उज्जवल भविष्य बना पाते हैं। उनके द्वारा दिए संस्कार ही हमें कई उलझनों एवं ठोकरों से बचाते हैं। संस्कारों के माध्यम से ही समाज में स्थान बनाने में सफल हो पाते हैं।

माता-पिता की आत्मा तब दुखती है जब हम उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते हैं और प्रतिकूलताओं से ग्रसित हो जाते हैं। याद रहे कि यदि आपने अपने माता-पिता का सिर झुकने नहीं दिया तो समझ लेना कि आप सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं। माता-पिता ही हैं जो हमें हमारी कथनी व करनी में समानता रखने की सलाह देते हैं। हमें निर्विकार रखने का प्रयास करते हैं। हमें विनम्रता, निश्छलता, व्यवहारिकता एवं ईमानदारी का पाठ पढ़ाते रहते हैं।

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

!! शुभकामना संदेश !!

प्रिय बन्धुवर,
श्री बलवीर सिंह जी (सम्पादक)
ज्ञानोदय ई–पत्रिका
स0शि0म0 नोएडा

यह जानकर अति प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं कि **सरस्वती शिशु मन्दिर,** नोएडा द्वारा मासिक **ज्ञानोदय ई-पत्रिका** का प्रकाशन आपके मार्गदर्शन में हो रहा है। पत्रिका शिक्षा क्षेत्र में नित नये प्रयोगो से समाहित होगी। पत्रिका विद्यालय की गतिविधियों का दर्पण होती है। जिसमें अध्यापक और अभिभावक मिलकर बालक के सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। इस पत्रिका में विद्वतजनों का भी सहयोग लेकर उनके अनुभवों को भी पत्रिका में स्थान मिले। इस पत्रिका के माध्यम से शिक्षा, संस्कार, सेवा, संवेदना से जुड़े विषयों के उद्देश्यों की पूर्ति होगी। भैया/बहिन में नये ज्ञान की ज्योति उत्सर्जन करेगी। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु आपको हार्दिक शुभकामनाऐं।

रविन्द्र सिंह
मेरठ सम्भाग निरीक्षक
ज0शि0स0

शुभकामनाएँ

संपादक महोदय
ज्ञानोदय ई-पत्रिका
स ० शि ० मं ०,नोएडा

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सरस्वती शिशु मंदिर मासिक ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" का जनवरी अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

रजनीश नारंग (व्यवस्था प्रमुख)
रा ० स्वं ० सं ०,नोएडा महानगर

शुभकामनाएँ

संपादक महोदय
ज्ञानोदय ई-पत्रिका
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सरस्वती शिशु मंदिर मासिक ई-पत्रिका का प्रकाशन एक लम्बे समय से अनवरत कर रहा है । पत्रिका के माध्यम से शिक्षकों तथा विद्वानों के अनुभवों को जानने का अवसर प्राप्त होता है साथ ही भैया/बहिनों व अभिभावकों को विद्यालय के क्रियाकलापों की जानकारी होती है।

इस दृष्टि से यह पत्रिका शिक्षकों के लिए ही नहीं बल्कि भैया /बहिनों व अभिभावकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी । यही पत्रिका शिक्षकों तथा समाज को दिशा बोध प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो इन्ही मंगल कामनाओं के साथ आपके सद्प्रयासों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

डा.नरेश शर्मा
कैलाश अस्पताल, ग्रेटर नोएडा

शुभकामनाएँ

आत्मीय श्री बलवीर सिंह जी,

सप्रेम नमस्कार ।

आपका पत्र मिला । यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि आप के संपादकत्व में "ज्ञानोदय" पत्रिका का संपादन हो रहा है । निश्चय ही नवीन पीढ़ी को दिशा और ज्ञान देने का कार्य "ज्ञानोदय" के द्वारा होगा । पत्रिका में वर्तमान चुनौतियों के साथ सामना करने तथा भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा का भाव पैदा करने का प्रयास सराहनीय है । कुशल संपादन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई ।

चंद्रभानु शर्मा (प्राचार्य)
वेद विद्यालय, दिल्ली

संपादकीय

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। जिस समाज में बदली परिस्थितियों के अनुसार अपने को समायोजित करने की क्षमता नहीं होती है तो उसमें जड़ता आना स्वभाविक है। इसलिए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति में स्थैतिकी के बजाय चरैवेति - चरैवेति को प्राथमिकता दी गई है। परिवर्तन स्वतः स्फूर्त एवं उत्प्रेरित दोनों प्रकार का हो सकता है। स्वतः स्फूर्त परिवर्तन से समायोजन की क्षमता समाज में अंतर्निहित होती है , क्योंकि यह समाज के विभिन्न घटकों के परिवर्तन की गति के अंतराल में असंतुलन के कारण होता है। जबकि उत्प्रेरित परिवर्तन समाज के बाहरी संरचना से आता है एवं इससे उत्पन्न असंतुलन से समायोजन में काफी समय लग सकता है। इस दौरान समाज में संघर्ष एवं विरोधाभास के तत्व भर सकते हैं।

मीडिया लोकतंत्र समाज का दर्पण एवं लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है जिससे प्रेरित होकर सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा ने भी ई- पत्रिका का शुभारंभ किया है । मैं ई-पत्रिका के पाठकों को पूर्ण आश्वस्त करता हूं कि यह पत्रिका आपके तथा आप के शिशुओं के विकास में सहयोगी सिद्ध होगी । साथ ही पत्रिका को और उपयोगी बनाने हेतु आपके परामर्श का हृदय से स्वागत करूँगा इसी आशा और अपेक्षा के साथ .....

आपका

सहयोगाकांक्षी

लेखराज सिंह (अंक संपादक)

Mob.No.9540485506

नैपुण्य वर्ग

दिनांक - 03 जनवरी 2022 को विद्यालय में **नैपुण्य वर्ग** का आयोजन किया गया। तथा सभी आचार्यों को **"राष्ट्रीय शिक्षा निति 2020"** में आये सुझावों से अवगत करने हेतु दिनांक-5 जनवरी 2022 को विद्यालय स्तर पर कार्यशाला आयोजित की गई।

जयंतियाँ

विद्यालय में दिनांक - 12 जनवरी 2022 को स्वामी विवेकानंद तथा 23 जनवरी 2022 को नेता जी सुभाष चंद्र बोस की जयंतियाँ मनाई गईं।

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय- ऑनलाइन कक्षा में वीडियो ऑन ना करना।

समस्या- हमने अपनी कक्षा के भैया/ बहनों का निरीक्षण किया। जिसके अंतर्गत ज्ञात हुआ कि ज्ञात हुआ कि कुछ भैया/ बहन ऑनलाइन कक्षा में वीडियो ऑन नहीं करते हैं।

समाधान- 1. अभिभावक से बातचीत करना।

2. भैया /बहनों से वीडियो ऑन ना करने का कारण पूछना।

3. भैया बहनों की समस्या को जानना।

4. ऑनलाइन कक्षा में उन भैया/बहनों पर विशेष ध्यान देना।

परिणाम- 1.समस्या को लेकर क्रिया शोध किया।

2. ऑनलाइन कक्षा में भैया/बहन वीडियो ऑन करने लगे।

3. कक्षा में सक्रिय रहने लगे।

शोधकर्ता – ज्योति शाक्य

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय : कक्षा कार्य पूर्ण न कर पाना ।

समस्या : कक्षा में निरीक्षण करने पर यह ज्ञात हुआ कि कुछ भैया बहिन कक्षा में कार्य पूर्ण नहीं कर पाते

समाधान :1) भैया/ बहनों पर विशेष ध्यान दिया ।

2) उन भैया बहनों से वार्ता करके उनकी समस्या का पता लगाया।

3) उन भैया बहनों को अन्य क्रियाकलापों जैसे पेंसिल ,रबड़ से खेलना इत्यादि करने से रोकना।

परिणाम :1) भैया/ बहिन कक्षा में कार्य करने लगे।

2) भैया बहिन अब कक्षा कार्य समय से पहले करने लगे।

शोधकर्ता- रजनी बिष्ट

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय-संस्कृत भाषा को अपनी संस्कृति से जोड़ने हेतु प्रयास

समस्या- भैया/ बहिन विद्यालय में अनेकों क्रियाकलापों , जैसे- वंदना ,भोजन मंत्र, वंदे मातरम् आदि का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते। संस्कृत विषय का ज्ञान सभी अभिभावकों को नहीं होता जिससे वह भैया /बहनों को ठीक से नहीं समझा पाते।

समाधान- अभिभावक भैया / बहिनों को घर पर भी वेद ,उपनिषद, गीता, रामायण आदि ग्रंथों से जोड़ने का प्रयास करें।

माता पिता संस्कृत विषय में रुचि उत्पन्न करने के लिए भैया / बहिनों से गीत , सुभाषित तथा मंत्रों का सस्वर उच्चारण करते हुए गायन करने का प्रयास करें। उच्चारण एवं लेखन संबंधी अशुद्धियों को अभ्यास द्वारा सुधार करने का प्रयास करना ,

अभिभावक अपने बच्चों को पूजा के समय साथ बैठाकर स्तुति, प्रार्थना व मंत्रों का उच्चारण करवाने हेतु प्रयास करें।

परिणाम- विद्यालय तथा घर पर अभ्यास करने से भैया / बहिनों के उच्चारण में सुधार आया है। सभी भैया/ बहिन स्वरबद्ध उच्चारण कर सकते हैं।

शोधकर्ता- मीरा सिमल्टी

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय : भैया/ बहिनों का गृह कार्य न करना।

समस्या : कक्षा में भैया/ बहिनों की उत्तर पुस्तिकाओं का निरीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि कुछ भैया/ बहिनों का गृह कार्य पूर्ण नहीं है।

समाधान: 1. **भैया/ बहिनों पर विशेष ध्यान देना।**
2. **अभिभावकों से संपर्क करना।**
3. **कार्य पूर्ण करने के लिए भैया/ बहिनों को बार-बार प्रोत्साहित करना।**

परिणाम : 1. **भैया/ बहिन कार्य को समझने में रुचि लेने लगे।**
2. **भैया/ बहिन अपना गृह कार्य पूर्ण करने लगे।**
3. **भैया/ बहिन विषय संबंधी प्रश्न पूछने लगे।**

शोधकर्ता - रचना शर्मा

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय- भैया- बहनों की ऑनलाइन कक्षा में अनुपस्थिति।

विवरण- कक्षा अरुण के पांच भैया-बहनों पर शोध किया गया।

समस्या- अभिभावकों के पास स्मार्टफोन का न होना, एक परिवार में एक ही समय में एक से अधिक भैया-बहनों की ऑनलाइन क्लास का होना। अभिभावकों में ऑनलाइन क्लास से संबंधित तकनीकी ज्ञान की कमी तथा नेटवर्क संबंधी समस्याएं।

समाधान- अभिभावकों से वार्तालाप करके ज़ूम क्लास में भैया -बहनों की उपस्थिति के लिए उन्हें जागरूक किया। अभिभावकों को ज़ूम ऐप की तकनीक से अवगत कराया तथा समय-समय पर अभिभावकों से संपर्क करके ऑनलाइन क्लास की जानकारी दी गई।

परिणाम- अभिभावकों ने स्मार्टफोन खरीदें व जूम ऐप का प्रयोग करना सीख लिया। अब भैया- बहन ऑनलाइन क्लास में जुड़ने लगे हैं।

शोधकर्ता- दीपिका डबास

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय:- अनुशासनहीनता

विवरण :- कक्षा उदय के पांच भैया बहिनों पर शोध किया गया।

समस्या :- कक्षा में अनावश्यक वार्तालाप करना। समय पर गृहकार्य न दिखाना । मित्रों के साथ सहयोग की भावना न रखना।अधिक समय तक कक्षा से बाहर रहना । अभिभावक का कहना न मानना।

समाधान :- अभिभावकों से दूरभाष के माध्यम से संपर्क किया। कहानी सुनकर नैतिक मूल्यों का महत्व समझाया।नाटक के माध्यम से जिम्मेदारी की भावना का विकास किया।कक्षा के दायित्व सौंप कर जिम्मेदार बनाया।

परिणाम :- भैया बहिन अनुशासन का महत्व समझ गए हैं।सभी की आज्ञा का पालन करते हैं और मित्रों का सहयोग करते हैं।अपने दायित्व प्रसन्न मन से पूर्ण करते हैं।

शोधकत्री

अंजली शर्मा

आचार्य अभिव्यक्तियाँ (क्रियाशोध)

विषय- लेखन सम्बंधी समस्या।

अपनी कक्षा के भैया/बहिनों की अभ्यास पुस्तिकाओं का निरीक्षण करने पर ज्ञात हुआ कि कुछ शिशुओं ने अशुद्धियां की हैं। अक्षरों की बनावट अशुद्ध है।

समाधान- 1. अभिभावकों को दूरभाष के माध्यम से सूचना देना ।

2. अभिभावक गोष्ठी के माध्यम से अवगत कराना ।

सुझाव – 1. उन शिशुओं पर एक माह तक विशेष ध्यान दिया।

2. अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखा।

3. अक्षरों के शुद्ध आकार एवं मात्राओं के उचित प्रयोग का अभ्यास कराया।

4. शिशुओं को बार -बार प्रोत्साहित किया ।

परिणाम – सभी शिशुओं का सुलेख में सुधार आया। लेखन में शुद्धता आ गयी ।

शोधकर्ता - रामेश्वर दयाल शर्मा

उत्तर- 1.जवाहरलाल नेहरू, 2.लाल बहादुर शास्त्री, 3.इंदिरा गांधी, 4.मोरारजी देसाई, 5.चौधरी चरण सिंह, 6.राजीव गांधी, 7.विश्वनाथ प्रताप सिंह, 8.चंद्रशेखर, 9.नरसिंह राव, 10.देवगौड़ा, 11.इंद्र कुमार गुजराल, 12.अटल बिहारी वाजपेई, 13.मनमोहन सिंह, 14.नरेंद्र मोदी

भैया /बहिनों के क्रियाकलाप

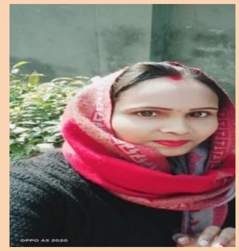

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

घर बालक की प्रथम पाठशाला है। बालक को घर में सभी गुण एवं संस्कार मिलते हैं । जिनकी उसे पाठशाला में आवश्यकता होती है। वहीं विद्यालय बालक को जीवन की जटिल परिस्थितियों का सामना करने योग्य बनाता है। विद्यालय में समाज की आदर्श विचारधाराओं का प्रचार होता है। घर बालक को समाज में व्यवहार करने की शिक्षा देता है। आज के विद्यालय बालक के विकास के लिए विशेष गतिविधियां प्रदान करते हैं ।

परिवार बालकों को सभी से अच्छे व्यवहार करने की प्रेरणा देता है। विद्यालय उत्तम शिक्षा एवं उत्तम विचार के विकास में योगदान देता है। इस प्रकार देखते हैं कि परिवार एवं विद्यालय बालक के विकास को अलग-अलग नहीं बल्कि एक रूप से भूमिका प्रदान करते हैं।

श्रीमती कंचन झा

रिया कुमारी, 2nd-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

परिवार बालक के विकास की प्रथम पाठशाला है। यह बालक मे निहित योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास करता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य बालक के विकास में योगदान देता है। परिवार सबसे पुराना और मौलिक मानव समूह है।

(१) परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है, वह परिवार में सभी प्रकार के गुण प्राप्त कर सकता है,जिसकी पाठशाला में आवश्यकता होती है।

(२) **बालकों** को परिवार में नैतिकता एवं सामाजिकता का प्रशिक्षण मिलता है।

(३) परिवार **बालकों** को उत्तम आदतों एवं चरित्र के विकास में योगदान देता है।

(४) परिवार में बालक की रुचि - अभिरुचि तथा प्रवृतियों का विकास होता है।

(५) सामाजिक,नैतिक तथा अध्यात्मिक मूल्यो का विकास करने मे परिवार का योगदान मुख्य है।

विद्यालय की भूमिका:-

(१) विद्यालय **बालकों** को जीवन की जटिल परीस्थिति का सामना करने योग्य बनाता है।
(२) विद्यालय **बालकों** को घर तथा संसार से जोड़ने का कार्य करता है।
(३) आधुनिक विद्यालय में **बालकों** का दृष्टिकोण विश्व के सन्दर्भ में विकसित किया है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम कह सकते **हैं** कि बालक के विकास में विद्यालय तथा परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, एक अच्छा परिवार, अच्छा विद्यालय व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

छवि शर्मा
दक्ष शर्मा, 2nd-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

घर बालक की प्रथम पाठशाला है।सर्वप्रथम बालक को अपने माता-पिता भाई-बहन एवं अपने सगे संबंधियों से ही व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। घर का उत्तम परिवेश बालक के अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। घर के सदस्यों का जैसा व्यवहार होता है बालक उन्हीं से विशेष प्रकार का व्यवहार सीखता है।

इसलिए हमें अपने परिवार का परिवेश ऐसा बनाना चाहिए जिससे कि बच्चे के व्यक्तित्व का विकास हो।वहीं दूसरी और विद्यालय भी बालक के विकास का प्रमुख स्रोत है। परिवार के बाद विद्यालय में ही उसका चहुमुखी विकास संभव हो पाता है। आधुनिक विद्यालयों में बालकों का दृष्टिकोण विश्व के संदर्भ में विकसित किया जाता है। आज के विद्यालय बालक के विकास के लिए विशेष वातावरण प्रस्तुत कराने का प्रयास करते हैं। पवित्र वातावरण में ही बालक में पवित्र भावनाओं का सृजन होता है। विद्यालय में बालकों का मानसिक, चारित्रिक ,सामुदायिक ,राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास होता है।

रूषा गुप्ता
लावण्या गुप्ता ,4th-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

१) परिवार ही वह स्थल है जहां व्यक्ति के शरीर,मन और विचारों की नींव पड़ती है।

२) परिवार बच्चों के विकास की प्रथम पाठशाला है।

३) परिवार बच्चों के अन्दर की योग्यताओं और क्षमताओं का विकास करता है।

४) परिवार समाज की न्यूनतम इकाई है।

५) बच्चा अपना प्रथम पाठ माता - पिता के प्यार से ही सीखता है।

६) परिवार का प्रत्येक सदस्य बच्चे के विकास में अपना योगदान देता है।

७) बाल्यावस्था से ही बच्चे अपने परिजनों से नयी - नयी चीजें सीखते व समझते हैं।

८) वह परिवार में सभी गुण सीख सकता है जिसकी पाठशाला में आवश्यकता होती है।

९) परिवार से ही बच्चा सर्वप्रथम नैतिकता व सामाजिकता का शिक्षण प्राप्त करता है।

१०) परिवार ही बच्चे में सामाजिक तथा अनुकूलन के गुण विकसित करता है।

११) आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने में परिवार का मुख्य योगदान होता है।

१२) परिवार ही बच्चों की उत्तम आदतों एवं चरित्र के विकास में योगदान देता है।

१३) परिवार द्वारा ही बच्चों को उत्तम व्यक्तित्व के विकास की शिक्षा दी जाती है।

१४) परिवार ही बच्चों को प्रेम और सहानुभूति की सर्वप्रथम शिक्षा प्रदान करता है।

१५) सहयोग, परोपकार,क्षमा, कर्त्तव्यपालन आदि गुणों की शिक्षा सर्वप्रथम परिवार द्वारा ही बच्चों को दी जाती है।

शिखा शुक्ला

ओम शुक्ला, 1st-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

1. बालकों को जीवन की जटिल परिस्थितियों का सामना करने योग्य बनाता है।

2. समाजिक संस्कृति विरासत का संरक्षण करता है तथा उसे अगली पीढ़ी से हस्तांतरित करता है।

3. विद्यालय बालकों को घर तथा संसार से जोड़ने का कार्य करते हैं।

4. व्यक्तित्व का सामजस्य पूर्ण विकास करने से विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है।

5. विद्यालय में समाज के आदर्शों, विचार धारकों का प्रचार होता है तथा अशिक्षित नागरिकों के निर्माण में योगदान देता है।

6. मनोविज्ञान में बालक के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव लाने की सहायता दी है, इसीलिए विद्यालय सूचना के बजाय बालकों को अनुभव प्रदान करते हैं।

7. आधुनिक विद्यालयों में बालकों का दृष्टिकोण विश्व के संदर्भ में विकसित किया है।

8. आज विद्यालय, सामुदायिक केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं, यह लघु समाज है।

9. विद्यालय बालकों का मानसिक, चरित्रिक सामुदायिक,राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विकास करता है तथा स्वस्थ रहने का प्रशिक्षण देते हैं।

10. समुदाय का प्रत्यक्ष प्रभाव बालक के सामाजिक विकास पर पड़ता है।

11. भारतीय समुदायों में उच्च शिक्षा के विकास पर भी बल दिया है।

दानवीर सिंह (विक्की तोमर)

कबीर सिंह ,1st-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

बालक के विकास में माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह बच्चे के प्रथम गुरु होते हैं और बच्चे के पहले दोस्त। बच्चे की विचारधारा को विकसित करने में माता-पिता की अहम भूमिका होती है। यह कहना गलत नहीं होगा की माता-पिता बालकों की जिंदगी में सांचे की तरह काम करते है । सांचा वह होता है जिससे किसी भी चीज़ को सही आकर दिया जा सकता है। विद्यालय भी बालक के विकास का प्रमुख स्रोत है, परिवार के बाद विद्यालय में ही उसका चहुमुखी विकास संभव हो पाता है।

आधुनिक विद्यालयों में बालकों का दृष्टिकोण विश्व के संदर्भ में विकसित किया जाता है। आज के विद्यालय बालक के विकास के लिए विशेष वातावरण प्रस्तुत कराने का प्रयास करते हैं। पवित्र वातावरण में ही बालक में पवित्र भावनाओं का सृजन होता है। विद्यालय में बालकों का मानसिक, चारित्रिक, सामुदायिक, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास होता है।

दीपा देवी

राहुल सिंह ,4th-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

परिवार बालकों में सामाजिक गुणों को सिखाता है । परिवार से बालक समाज के तौर-तरीके सीखते हैं। वे अपने परिजनों से चली आ रही संस्कृति-संस्कार सीखते हैं । परिवार बालकों को समाज में रहने के योग्य बनाता है। परिवार अपने बच्चों को अच्छी सीख देता हैं। एक सभ्य परिवार के बिना एक सभ्य बालक की कल्पना करना असंभव है।

बालक के विकास में विद्यालय की भी उतनी ही भूमिका है जितनी कि परिवार की है। विद्यालय वह इकाई है जो बालक को समाज एवं संसार से जोड़ता है । उसके अंदर समाज के आदर्शों एवं विचार-विमर्श का प्रचार करते हुए सामाजिक, मानसिक, रचनात्मक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक एवं मौलिक नेतृत्व की क्षमता का विकास करता है । अतः बाल्यावस्था के विकास में परिवार एवं विद्यालय दोनों की ही भूमिका सर्वोपरि है।

श्रीमती सविता
सृष्टि, 3rd-D

अभिभावक अभिव्यक्तियाँ

बालक के विकास में विद्यालय व परिवार की भूमिका

परिवार बालक के विकास की प्रथम पाठशाला है । परिवार का मुख्य कार्य बालक का लालन पालन करना एवं समाज व संस्कृति से परिचित करवाना होता है । सारांश में उसका सामाजिकरण करना, उदारता ,साहस , निस्वार्थ भाव, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, परिश्रम एवं आलस में अन्तर सिखाता है । किंतु परिवार के साथ-साथ इन सभी गुणों को पूर्णतः विकसित करने में विद्यालय की अहम भूमिका होती है , अन्यथा उन सभी गुणों का विकास अपूर्ण एवं असंभव ही रहता है । विद्यालय में आकर ही बालक इन सभी गुणों को पूर्णत: विकसित एवं परिष्कृत कर पाता है । बालक के विकास में जहां परिवार अहम भूमिका निभाता है वही विद्यालय उस विकास को सर्वोच्चता के शिखर पर ले जाने में सहायक है।

श्रीमती चंचल दुधोडिया
जयणा दुधोडिया, 3rd-D

लोहड़ी, मकर संक्रांति व गणेश चतुर्थी कार्यक्रम

दिनांक 13 जनवरी ,14 जनवरी व 21 जनवरी 2022 कोविद्यालय में क्रमशः लोहड़ी ,मकर संक्रान्ति (समरसता दिवस) व गणेश चतुर्थी का कार्यक्रम मनाया गया।

गणतंत्र दिवस

भारत भवन
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा
सरस्वती शिशु मन्दिर

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर
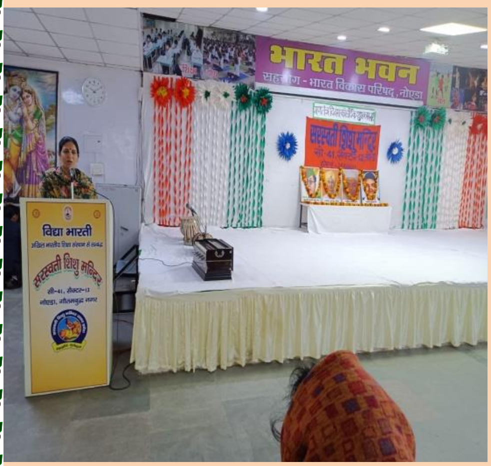
भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

भारत भवन
विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

प्रतिभा खोज प्रतियोगिता

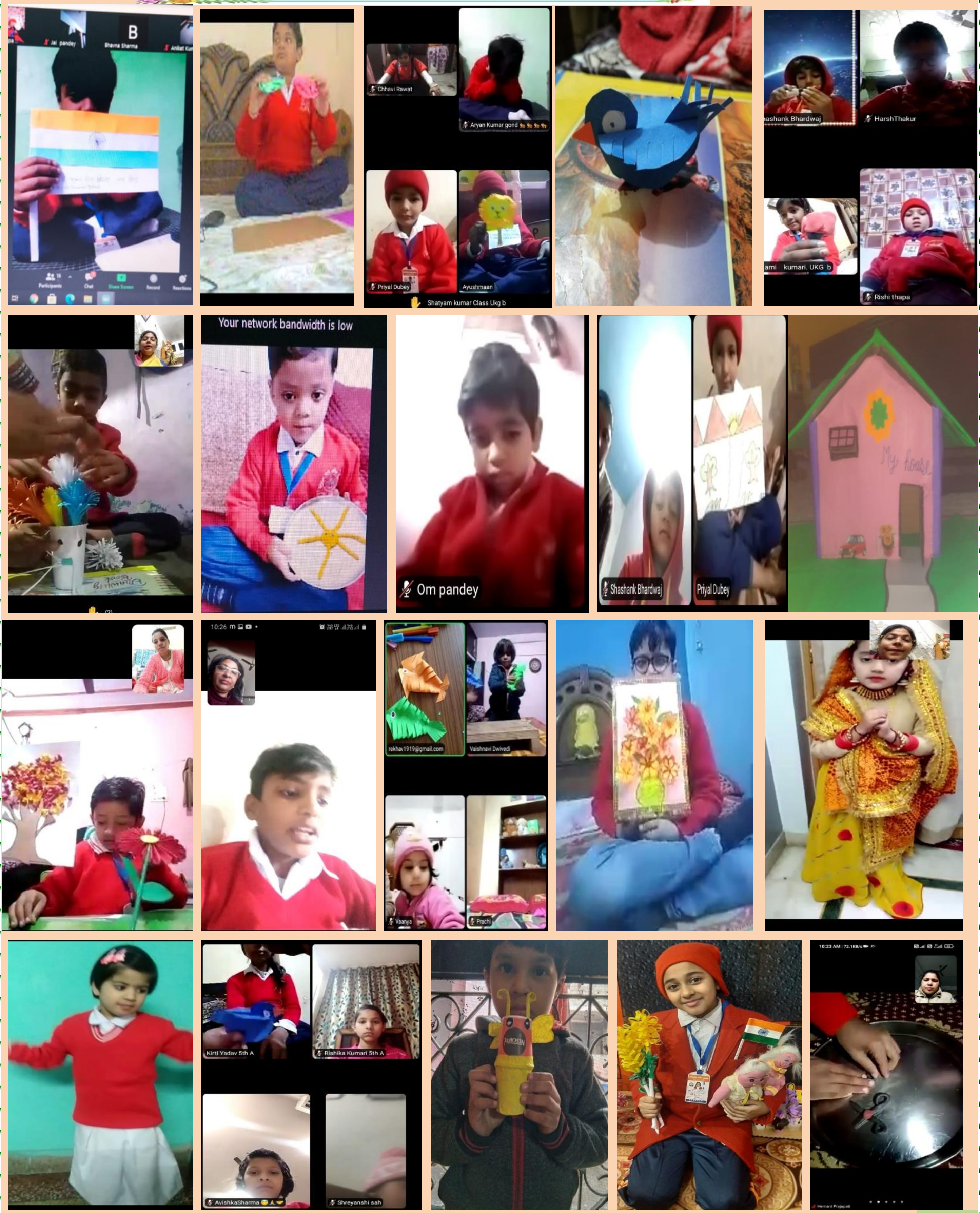

सूर्य नमस्कार अभ्यास

30 जनवरी 2020 को विद्यालय के सभी आचार्य-आचार्या बहिनों व कर्मचारियों ने सूर्य नमस्कार का सामूहिक अभ्यास किया।

बच्चों का कोना

नीचे बोर्ड पर हिंदुस्तान के आज तक के प्रधानमंत्रियों के नाम अक्षरों का अनुक्रम बदल कर दिए गए हैं उन्हें सरल करके लिखिए-

1. वा ज ह र ला ल ह ने रू
2. हा ल ब दु र शा ला स्त्री
3. दि इं रा धी गां
4. रा मो र जी ई दे सा
5. र चौ ध सिं च र ण ह
6. जी धी रा व गां
7. ना वि श्व सिंथ प्र ता प ह
8. शे चं द्र ख र
9. सिं न रा र ह व
10. वे दे गौ डा
11. मा इं द्र ज कु र गु रा ल
12. हा अ ट वा ल बि री ज पे यी
13. न म न ह मो ह सिं
14. मो न रें दी द्र

सही उत्तर पत्रिका में ही किसी अन्य पेज पर खोजें ।

सामान्य ज्ञान

देश	प्राचीन नाम
कंबोडिया	कंबोज देश
थाईलैंड	स्याम देश
वियतनाम	चंपा देश
लाओस	लव देश
मलाया	मलय द्वीप
जावा	यव द्वीप
बोर्नियो	वरुण द्वीप
अफगानिस्तान	गांधार देश
ईरान	आर्यान,परशुदेश
मैक्सिको	मय देश
म्यांमार	ब्रह्मदेश

अमृतवाणी

"अनासक्ति से मिलेगा आनंद"

आसक्ति ही हमारे दुख का कारण है। कोई बात हमें चोट पहुंचा रही है , यह जानकर भी हम उससे चिपके रहते हैं । मधुमक्खी तो शहर चाटने आई थी, पर उसके पैर मधुचषक से चिपक गए । हम भी ऐसे ही स्थिति का अनुभव करते हैं । हम प्रयत्न करते हैं कि दूसरों के मन पर हमारा अधिकार हो, पर कोई हमारे मन पर अधिकार करने लगता है । हम चाहते हैं कि जीवन के भोग भोगें, पर भोग हमारी जीवनी शक्ति का भक्षण कर लेते हैं । हम प्रकृति का सब कुछ हरण करना चाहते हैं और देखते हैं कि प्रकृति ने हमारा सब कुछ हरण कर लिया ।

गीता में कहा गया है - निरंतर काम करते रहो, पर आसक्त मत होओ, बंधन में मत पड़ो। प्रत्येक वस्तु से स्वतंत्र बना लेने की शक्ति स्वयं मैं संचित रखो । दुर्बलता से मनुष्य गुलाम बनता है । दुर्बलता के कारण ही मनुष्य पर शारीरिक और मानसिक दुख आते हैं । लाखों - करोड़ों जीवाणु हमारे आसपास हैं । जब तक हम दुर्बल नहीं होते , तब तक वे हमें नुकसान नहीं पहुंचाते। ऐसे दुख रुपी कीटाणु हमारे आसपास क्यों ना मंडराते रहें, पर चिंता ना करो । जब तक हमारा मन कमजोर नहीं होता, तब तक की हिम्मत नहीं कि वे हमारे पास फटकें।

लेकिन हम अपने मित्रों और संबंधियों में आसक्त हैं, अपने बौद्धिक और अध्यात्मिक कार्यों में आसक्त हैं। पर सोचो, आसक्ति के अतिरिक्त क्या अन्य किसी कारण से हम पर दुख आता है? अतएव आनंद प्राप्त करने के लिए हमें अनासक्त होना ही चाहिए।